SHRI VELU AASAN

Shri Velu Aasan is one of the senior and foremost well-known Parai artists in Tamil Nadu. Parai, also known as Thappu or Thappattai is a traditional percussion instrument from South India. It is a traditional instrument used to make announcements and played during temple festivals, cultural folk performances, weddings and functions.

2. Born on 20th May, 1970, Shri Velu Aasan did not continue his study beyond the fourth grade of elementary school. Due to the family's poverty, he began performing Parai music with his father at the age of 10 for the world famous Alanganallur Jallikkattu (Bull Fight), temple festivals and sometimes funeral processions. He has been performing for the last 34 years to revive and rejuvenate Parai music, one of the traditional arts that is on the verge of extinction, and its artists. It is traditional to honour the Jallikattu only after the swami darshan is completed and the Parai instrument is played. He is proud to have proclaimed the Parai Music of traditional not only in the Indian context but also in the universal folklore arena.

3. As cultural festivals grew, the importance of Parai music and performance was realized by the public. Shri Velu Aasan became a trainer who taught this music, dance and performance to people from schools, colleges and various folk groups. As an artist and a trainer, he was called a Velu Aasan (Teacher). His performance, which began with 52 steps (Adavu) through his memory power, has today reached more than 110 steps by his traditional knowledge. Not only as a trainer, he was also an expert in making drum and skin instruments. He has produced more than thousands of skin instruments.

4. Shri Velu Aasan became a trainer who took drum music and its culture to the world stage. He traveled to America, China, Malaysia, and Singapore and made this art known to the world. In the last 30 years, he has given more than 1200 programs and training. He has acted in more than thirty-five films in Tamil and Telugu. After 2001, he started an association of 'Thappaatta Kalainjargal Sangam' in Madurai and was involved in the work of organising many folk artists.

5. Shri Velu Aasan has been awarded by several organizations in recognition of his artistic contribution and cultural dedication. He has received the Ayya Azhagar Sami Award by Dalit Resource Centre - 2004, Om Muthu Mari Award by University of Madras, Parai Isai Sirpi Award in 2015 by Alagappa University and Kalai Nanmani Award in 2021 by Department of Art and Culture, Tamil Nadu.

श्री वेलु आसान

श्री वेलु आसान तमिलनाडु के वरिष्ठ और सबसे प्रसिद्ध पराई कलाकारों में से एक हैं। पराई, जिसे थप्पू या थप्पट्टई के नाम से भी जाना जाता है, दक्षिण भारत का एक पारंपरिक ताल वाद्य यंत्र है। यह एक पारंपरिक वाद्य यंत्र है जिसका उपयोग घोषणा करने के लिए किया जाता है और मंदिर उत्सवों, सांस्कृतिक लोक प्रदर्शनों, शादियों और समारोहों के दौरान बजाया जाता है।

2. 20 मई, 1970 को जन्मे, श्री वेलु आसान ने प्राथमिक विद्यालय की चौथी कक्षा से आगे अपनी पढ़ाई जारी नहीं रखी। परिवार की गरीबी के कारण, उन्होंने 10 वर्ष की आयु में अपने पिता के साथ विश्व प्रसिद्ध अलंगनल्लूर जल्लीकट्टू (बैल लड़ाई), मंदिर उत्सवों और कभी–कभी अंतिम संस्कार जुलूसों के लिए पराई संगीत का प्रदर्शन करना शुरू कर दिया। वह पिछले 34 वर्षों से विलुप्त होने के कगार पर पहुँच चुकी पराई संगीत, एक पारंपरिक कला और उसके कलाकारों को पुनर्जीवित करने और फिर से जीवंत करने के लिए प्रदर्शन कर रहे हैं। स्वामी दर्शन पूरा होने और पराई वाद्य बजाने के बाद ही जल्लीकट्टू का सम्मान करना पारंपरिक है। उन्हें न केवल भारतीय संदर्भ में बल्कि सार्वभौमिक लोकगीत क्षेत्र में भी पराई संगीत को पारंपरिक घोषित करने पर गर्व है।

3. जैसे–जैसे सांस्कृतिक उत्सवों का विस्तार हुआ, लोगों को पराई संगीत और प्रदर्शन का महत्व समझ में आने लगा। श्री वेलु आसान एक प्रशिक्षक बन गए जिन्होंने स्कूलों, कॉलेजों और विभिन्न लोक समूहों के लोगों को यह संगीत, नृत्य और प्रदर्शन सिखाया। एक कलाकार और प्रशिक्षक के रूप में, उन्हें वेलु आसन (शिक्षक) कहा जाता था। उनकी स्मरण शक्ति के माध्यम से 52 चरणों (अदावु) से शुरू हुआ उनका प्रदर्शन आज उनके पारंपरिक ज्ञान से 110 से अधिक चरणों तक पहुँच चुका है। वह न केवल एक प्रशिक्षक थे, बल्कि वे ढोल और चमड़े के वाद्ययंत्र बनाने में भी माहिर थे। उन्होंने हज़ारों से अधिक चमड़े के वाद्ययंत्र बनाए हैं।

4. श्री वेलु आसान एक ऐसे प्रशिक्षक बने जिन्होंने ड्रम संगीत और इसकी संस्कृति को विश्व पटल तक पहुंचाया। उन्होंने अमेरिका, चीन, मलेशिया और सिंगापुर की यात्रा की और इस कला को दुनिया भर में मशहूर किया। पिछले 30 सालों में उन्होंने 1200 से ज़्यादा कार्यक्रम और प्रशिक्षण दिए हैं। उन्होंने तमिल और तेलुगु की पैंतीस से ज़्यादा फ़िल्मों में काम किया है। वर्ष 2001 के बाद उन्होंने मदुरै में 'थप्पाट्टा कलैनजरगल संगम' नामक संस्था शुरू की और कई लोक कलाकारों को संगठित करने के काम में शामिल रहे।

5. श्री वेलु आसान को उनके कलात्मक योगदान और सांस्कृतिक समर्पण के लिए कई संगठनों द्वारा सम्मानित किया गया है। उन्हें दलित संसाधन केंद्र द्वारा अय्या अज़गर सामी पुरस्कार – 2004, मद्रास विश्वविद्यालय द्वारा ओम मुथु मारी पुरस्कार, अलगप्पा विश्वविद्यालय द्वारा वर्ष 2015 में पराई इसाई सिरपी पुरस्कार और कला और संस्कृति विभाग, तमिलनाडु द्वारा वर्ष 2021 में कलाई नानमनी पुरस्कार मिला है।